



अजामुख

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats



Goat – The future animal

f CIRGMATHURA

t GoatResIndia

Y youtube.com/channel/UC2zogtuPHAgm_0f8flWw7UQ

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:

डा. अरविंद कुमार

सम्पादक :

डा. अनु राहल

डा. नीतिका शर्मा

डा. अरुण कुमार वर्मा

छायांकन

सतीश चन्द्रा

निदेशक, भा.कृ.अ.प.-
केन्द्रीय बकरी अनुसंधान
संस्थान, मखदूम, फरह,
मथुरा (उ.प्र.) भारत द्वारा
प्रकाशित

<http://www.cirg.res.in>
किसान एकल खिड़की :
0565-2970999

निदेशक की कलम से



अजामुख के इस 45 वें अंक को प्रकाशित करते हुये मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस दौरान संस्थान ने वे सभी महत्वपूर्ण प्रयास और आयोजन किये जो कि बकरी पालक समुदाय की सेवा और अनुसंधान उत्कृष्टता प्राप्त करने के अवसर प्रदान करते हैं। बकरी के मांस और दूध की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे यह क्षेत्र छोटे और सीमांत किसानों के लिए एक आकर्षक उद्यम रहा है। हमारे प्रयासों और निरंतर समर्थन के माध्यम से, हमने उन किसानों की उल्लेखनीय सफलता की कहानियाँ देखी हैं जिन्होंने इस उद्यम के माध्यम से अपने जीवन में परिवर्तन लाया है। उत्कृष्ट जलवायु और रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण, दुनिया भर में विशाल मानव आबादी के पोषण के साथ-साथ आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बकरियां आकर्षण का केंद्र बिंदु बनंगी। भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान अपनी स्थापना के बाद से अनुसंधान, विस्तार गतिविधियों, आउटरीच कार्यक्रमों, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, बकरी उद्यमिता, वैज्ञानिक बकरी पालन पर प्रमुख कार्यक्रम और बकरी किसानों के आर्थिक उत्थान के साथ देश की सेवा कर रहा है। हमारा संस्थान व्यावसायिक बकरी पालन हेतु विशिष्ट तकनीकियों पर काम कर रहा है जिसमें बेहतर जर्म प्लाज्म चयन, कृत्रिम गर्भधान, एस्ट्रस सिंक्रोनाइज़ेशन, लेप्रोस्कोपी द्वारा डिंब पिकअप, जीनोम संपादन, पैलेटेड फीड, मीथेन शमन, रोग निदान हेतु दवा फॉर्मूलेशन और विशेष बकरी उत्पाद आदि हैं। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बकरी पालकों के विकास हेतु डीएपीएससी एवं डीएपीएसटी कार्य योजना के तहत क्रमशः 10 और 12 गांवों को अपनाया गया है। इन गांवों में बकरी के समग्र विकास से संबंधित तकनीकियों का प्रसार कर गांव को मॉडल बकरी गांव के रूप में विकसित करने के लिए केंद्रित प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवधि के दौरान संस्थान में कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों जैसे - बकरी प्रजनन रणनीतियों पर मंथन, विश्व बकरी दिवस, हर घर तिरंगा, हिंदी पछवाड़ा, मेरी माटी मेरा देश, स्वच्छता पछवाड़ा, बकरी उद्यमिता विकास दिवस, 44 वां संस्थान स्थापना दिवस एवं किसान दिवस का आयोजन तथा कई वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण और विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्थान ने राज्य में बकरी क्षेत्र के विकास के लिए उत्तर प्रदेश पशुपालन एवं डेयरी विभाग के साथ समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किये। इस दौरान संस्थान द्वारा विकसित 9 तकनीकियों का भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रमाणीकरण प्राप्त हुआ तथा बकरी पालन के प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण हेतु आन-लाइन पोर्टल का भी शुभारंभ हुआ। इस दौरान कई विश्वविद्यालयों के कुलपति, सचिव पशुपालन-भारत सरकार, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के चेयरमैन एवं सदस्य, भा.कृ.अ.परिषद के अधिकारीगण एवं मंत्रालय के अधिकारियों ने संस्थान का दौरा किया और विभिन्न चर्चाओं के माध्यम से अवसरों की शोभा बढ़ाई। मुझे विश्वास है कि अजामुख के इस अंक में संकलित जानकारी बकरी पालकों एवं पशु चिकित्सकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। मैं अजामुख के सम्पदकीय मण्डल के अध्यक्ष एवं सदस्यों को इस महत्वपूर्ण संकलन के लिए बधाई देता हूँ।

(मनीष कुमार चेटली)
निदेशक

फ़ाइब्रोब्लास्ट कोशिकाएँ: कार्य और अनुप्रयोग



पशुओं की त्वचा, जो शरीर की सबसे बाहरी परत है, जैव रासायनिक और अंतःग्रावी संतुलन बनाए रखने और बाहरी सूक्ष्मजीवों से शरीर की रक्षा करने के लिए महत्वपूर्ण है।

त्वचा की बाहरी पतली परत, जिसे एपिडर्मिस कहा जाता है, और आंतरिक मोटी परत, जिसे डर्मिस कहा जाता है, ज्यादातर फ़ाइब्रोब्लास्ट कोशिकाओं से बनी होती है जो कोलेजन-समृद्ध बाह्य कोशिकीय मैट्रिक्स (ईसीएम) को संश्लेषित करती है जो त्वचा को इसकी प्राथमिक संरचना और ताकत देती है।

अन्स्टर्ट ज़िग्लर ने सबसे पहले 'फ़ाइब्रोब्लास्ट' शब्द का इस्तेमाल उन कोशिकाओं को संदर्भित करने के लिए किया था जो उपचार प्रक्रिया के दौरान संयोजी ऊतक को पुनर्जीवित करते हैं।

महत्वपूर्ण अंग गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करने के लिए ये कोशिकाएँ बाह्य कोशिकीय मैट्रिक्स (ईसीएम) की शारीरिक रूप से विविध सरणी बनाती हैं और बनाए रखती हैं। समृद्ध संयोजी ऊतक-फ़ाइब्रोब्लास्ट साइटोकिन्स, विकास कारकों और मेटाबोलाइट्स सहित घुलनशील मध्यस्थों के उत्पादन को विनियमित करके और ईसीएम में सूक्ष्म-बायोमैकेनिकल और जैव रासायनिक संकेत प्रदान करके ऐसा करते हैं। फ़ाइब्रोब्लास्ट न केवल संयोजी ऊतक का उत्पादन करते हैं बल्कि भ्रूण के विकास, वयस्क होमियोस्टेसिस, मरम्मत और रीमॉडलिंग के दौरान कुछ मेसेनकाइमल कोशिका प्रकारों के लिए पूर्वज के रूप में भी कार्य करते हैं।

संयोजी ऊतक परिवार में सबसे कम विशिष्ट कोशिकाओं को फ़ाइब्रोब्लास्ट कहा जाता है। जब किसी ऊतक को चोट लगती है, तो आसपास के फ़ाइब्रोब्लास्ट बढ़ जाते हैं, घाव में चले जाते हैं, और बहुत सारे कोलेजनस मैट्रिक्स बनाते हैं, जो फटे हुए ऊतक को अलग करने और ठीक करने में सहायता करते हैं। बायोमटेरियल इम्प्लांट बनाने के लिए इन कोशिकाओं का गहन अध्ययन किया गया है जो मधुमेह

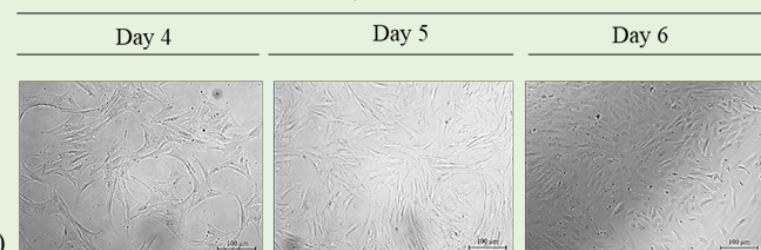
एस. पी. सिंह, जूही पाठक, वार्ड के सोनी एवं एस. डी. खर्चे

संबंधी पैर के अल्सर के इलाज के लिए विकास कारकों का स्राव करते हैं क्योंकि वे घाव भरने के लिए आवश्यक हैं। प्लास्टिक सर्जरी में, बायोडिग्रेडेबल जाल में संवर्धित फ़ाइब्रोब्लास्ट महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि उनका उपयोग जीवित त्वचीय विकल्प के रूप में किया जा सकता है। ऊतक-इंजीनियर्ड जैविक ड्रेसिंग का उपयोग कई त्वचा संबंधी विकारों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण क्षमता दिखाता है, जिसमें छाले और जलन के साथ-साथ क्रोनिक अल्सर भी शामिल हैं।

बाह्य कोशिकीय मैट्रिक्स (ईसीएम) के गठन से परे, आवश्यक फ़ाइब्रोब्लास्ट कार्यों का उपयोग प्राकृतिक सूर्य के प्रकाश के संपर्क से मेलेनोमा विकास की जांच के लिए एक मॉडल के रूप में भी किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्लुरिपोटेंट स्टेम सेल या आईपीएस कोशिकाओं को प्रेरित करने के लिए नियोजित किए जाने पर फ़ाइब्रोब्लास्ट कोशिकाओं ने प्रभावशीलता दिखाई है। इसके अलावा, क्लोनिंग और आनुवंशिक रूप से परिवर्तित प्राणियों को बनाने में फ़ाइब्रोब्लास्ट कोशिकाओं की बहुत अधिक संभावनाएँ हैं। इसके अलावा, फ़ाइब्रोब्लास्ट सेल लाइनों का निर्माण और सेल के जीन या प्रोटीन कार्यों की जांच में उनका उपयोग आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण और अनुप्रयोग में महत्वपूर्ण सहायता करेगा। घरेलू और जंगली दोनों जानवरों के लिए, दैहिक कोशिकाओं का क्रायोप्रिजर्वेशन लुप्तप्राय नस्लों, प्रजातियों या जानवरों के संरक्षण के लिए एक दिलचस्प विकल्प प्रदान करता है।

इसके अलावा, फ़ाइब्रोब्लास्ट कोशिका शरीर किया विज्ञान के कई पहलुओं, विशेष रूप से त्वचा जीव विज्ञान से जुड़े पहलुओं और स्वस्थ और रोगग्रस्त ऊतकों में फ़ाइब्रोब्लास्ट फ़ंक्शन को नियंत्रित करने वाले आणविक तंत्र पर शोध करने के लिए एक महान मॉडल प्रणाली प्रदान करती है। फ़ाइब्रोब्लास्ट को उनके उपयोग में आसानी के कारण प्राथमिक कोशिका संवर्धन और स्थायी, परिवर्तित कोशिका के निर्माण के लिए भी नियोजित किया गया है।

Skin Fibroblast Monolayer



चित्र: त्वचा के ऊतकों से प्राथमिक वयस्क त्वचीय फ़ाइब्रोब्लास्ट। (अ) प्रतिनिधि छवियां सुसंस्कृत त्वचा ऊतक प्रत्यारोपण से कोशिकाओं के विकास को प्रस्तुत करती हैं। (ब) बकरी त्वचीय फ़ाइब्रोब्लास्ट की प्रतिनिधि छवियां। स्केल बार 100 μm

बकरियों के लिए प्लास्टिक आधारित हैंगिंग फीडर



भारत में परंपरागत बकरी पालकों में प्रति परिवार बकरियों की संख्या लगभग 4 से 10 पाई जाती है। इनको रखने के लिए उपयुक्त बकरी आवास का अभाव रहता है या कम क्षेत्रफल का आवास पाया जाता है। अधिकांश बकरी आवास का क्षेत्रफल 50 से 80 वर्ग फुट के बीच है। इससे पता चलता है कि बकरियों के आवास के लिए जगह की बड़ी कमी है, यहाँ तक कि कभी-कभी बकरी पालक उन्हें अपने घर के अंदर ही रखते हैं। सीआईआरजी द्वारा विकसित स्टैंडिंग टाइप आयरन/ प्लास्टिक फीडर जिसमें बकरियां फीडर के दोनों तरफ से चारा लेती हैं, व्यावसायिक बकरी फार्मों के लिए बहुत अच्छा है जहां वैज्ञानिक मानदंडों के अनुसार जगह प्रदान की जाती है। लेकिन यह परंपरागत बकरी पालकों के लिए जिनके पास छोटे बकरी आवास हैं उपयुक्त नहीं है। बड़े आकार के स्टैंडिंग फीडर 50–80 वर्ग फुट के बकरी आवास में से लगभग 15 वर्ग फुट क्षेत्रफल घेरे लेते हैं, जो पहले से ही भीड़-भाड़ वाला है। इसके अलावा अलग-अलग ऊँचाई वाले खड़े प्रकार के फीडर नस्ल विशिष्ट अर्थात् छोटी, मध्यम और बड़ी नस्लों के लिए अलग विकसित किए गए थे। इसमें बकरियां फीडर के ऊपर चढ़ कर बैठ जाती हैं और चारे दाने को दूषित करती हैं। इस समस्या को हल करने के लिए प्लास्टिक आधारित लोहे के फ्रेम पर बने हैंगिंग फीडर का विकास संस्थान की एक परियोजना 'कृषि संरचना और पर्यावरण प्रबंधन में प्लास्टिक इंजीनियरिंग' पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना' के अंतर्गत किया गया है। इसे बकरी आवास के अंदर किसी एक दीवार/ जाली पर अलग-अलग ऊँचाई में लटकाया जा सकता है ताकि एक ही फीडर का उपयोग विभिन्न ऊँचाइयों की किसी भी नस्ल की बकरियों के लिए किया जा सके।

हैंगिंग फीडर की डिजाइन और निर्माण

इस हैंगिंग प्लास्टिक फीडर (दीवार/ जाली से लटकाई जाने वाली प्लास्टिक की बनी चरही) को 32 मि.मी. आकार के मध्यम मोटाई के एंगल आयरन और 32 मि.मी. चौड़े फ्लैट आयरन के फ्रेम पर 3 मि.मी. मोटी एफआरपी शीट के द्वारा निर्मित किया गया है। भूसा रखने के लिए 8 मि.मी. व्यास की छड़ों से V आकार का फ्रेम बनाया गया है। दाना खिलाने हेतु फीडर ट्रे के लिए नीचे 300 मि.मी. व्यास वाली आधी कटी हुई पीवीसी पाइप का उपयोग किया गया है। फीडर की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई तथा फीडर ट्रे की चौड़ाई आदि का निर्धारण बकरियों के औसत आकार एवं उनकी संख्या से किया गया है। फीडर की लंबाई 150 सेमी, फीडर ट्रे की चौड़ाई 30 सेमी और शीर्ष भाग की चौड़ाई 38 सेमी रखी गई है। यह आयाम बकरियों के सिर के आकार

अरविन्द कुमार, भुवनेश्वर राय, आर. पुरुषोत्तमन एवं रंजीत सिंह

और आहार ग्रहण की सुविधाजनक ऊँचाई के आधार पर तय किया गया है। फीडर को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि दाना / भूसा ट्रे के बाहर कम से कम गिरे जिससे कि नुकसान नगण्य रहे। शीर्ष भाग की चौड़ाई और साथ ही भूसा को रोकने वाली लोहे की छड़ों के बीच की दूरी को मानकीकृत किया गया। इस फीडर में, भूसा दो तरफा फीडर की तरह अपने आप पूरी तरह से नहीं गिरता है, बल्कि यह केवल तभी गिरेगा जब आहार लेते समय जानवर इसे खोंचेगे।

एक समय में खिलाई जा सकने वाली छोटे आकार की बकरियों (बरबरी) की अधिकतम संख्या 8 हो सकती है। फीडर का वजन 25 किग्रा है। फीडर की वजन वहन क्षमता 65 किलोग्राम तक सुरक्षित पाई गई है।

फीडर में दाना आहार का अधिकतम वजन 1.5 किग्रा/पशु = 8 x 1.5 = 12 किग्रा।

हरे और सूखे चारे की अधिकतम मात्रा शारीर के वजन का 5 % शुष्क पदार्थ की आवश्यकता

बरबरी नस्ल का औसत वजन 30 किग्रा अतः 1.5 किलोग्राम शुष्क पदार्थ की आवश्यकता होगी।

0.5 किग्रा भूसा एवं हरे चारे से (जिसमें औसतन 40% शुष्क पदार्थ) 1 किग्रा शुष्क पदार्थ = 1.5 किग्रा

8 पशुओं के लिए आवश्यक सूखे और हरे चारे का वजन =

$$8 (0.5+2.5) = 24.0 \text{ किग्रा}$$

दाने और चारे का कुल वजन = 12+24=36 किलोग्राम जो कि सुरक्षित है।

प्लास्टिक आधारित हैंगिंग फीडर की व्यावहारिक उपयोगिता

इस प्लास्टिक आधारित लोहे के फ्रेम पर बने हैंगिंग फीडर की व्यावहारिक उपयोगिता निम्न प्रकार हैं।

- ऐसे क्षेत्रों के लिए उपयुक्त जहां जगह की कमी होती है। इसे बकरी आवास में एक तरफ लटकाने से जमीन पर रखे जानेवाले फीडर की तुलना में पर्याप्त जगह बचाई जा सकती है।
- आवश्यकता पड़ने पर इसे एक जगह से दूसरी जगह आसानी से स्थानांतरित किया जा सकता है।
- ऊँचाई का समायोजन हो सकने के कारण इसे आवश्यकतानुसार अलग-अलग ऊँचाई पर लटकाकर एक ही फीडर का उपयोग विभिन्न बकरी नस्लों के लिए किया जा सकता है।
- लोहे के फीडर की तुलना में, जहां जंग लगना एक बड़ी समस्या है, प्लास्टिक आधारित यह फीडर कम लागत और लंबे समय तक चलने वाला है।

बकरियों की प्रजाति एवं आकार के अनुसार हैंगिंग फीडर की ऊँचाई का समायोजन



बकरी की सभी नस्ल के बच्चों के लिए जमीन से फीडर तल की ऊँचाई 10 से.मी.



वयस्क बरबरी नस्ल (8 पशु/फीडर) के लिए जमीन से फीडर तल की ऊँचाई 28 से.मी.



वयस्क बीटल नस्ल (6 पशु/फीडर) के लिए जमीन से फीडर तल की ऊँचाई 58 से.मी.

चित्र: बकरी की विभिन्न नस्लों के लिए जमीन से फीडर तल की उपयुक्त ऊँचाई

ऑनलाइन मांस विपणन-डिजिटल युग में नए अवसर



तरुण पाल सिंह, अरुण कुमार वर्मा, वी. राजकुमार, रवीन्द्र कुमार एवं मनीष कुमार चेटली

मांस उत्पादन भारत में एक महत्वपूर्ण और लाभकारी व्यावसायिक क्षेत्र है, जिसमें डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग करके नए अवसर खुल रहे हैं। यहां पशुधन की विविधता, भूमि के विभिन्न भागों में उपलब्ध खाद्य, और

आधुनिक तकनीकी उन्नति के कारण मांस उत्पादन उच्च स्तर पर है।

बकरी का मांस भारत में महत्वपूर्ण भोजन है और इसका उत्पादन भारतीय कृषि व्यवसाय का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बकरी का मांस स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बहुत प्रसिद्ध है और इसकी मांग लगातार बढ़ रही है, एवं इसमें वेब के उपयोग से नए द्वार खुले हैं। पिछले दशक के दौरान, भारतीय उपभोक्ताओं के खरीदारी व्यवहार में जबरदस्त बदलाव आया है। ऑनलाइन शॉपिंग की शुरुआत के साथ, भारतीय विपणन पूरी तरह से बदल गया है और कई ऑनलाइन खाद्य आपूर्तिकर्ता सामने आए हैं। लोग अब ऑनलाइन खरीदारी को अधिक पसंद कर रहे हैं। यह विपणन के क्षेत्र में एक स्वार्थी बदलाव ला रहा है। विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय विपणन के क्षेत्र में ऑनलाइन मांस विपणन एक बड़ा क्षेत्र है, जिसमें नए स्टार्टअप्स और छोटे व्यवसाय अपनी पहचान बना रहे हैं। इस बदलते परिदृश्य में स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन मांस विपणन एक उत्कृष्ट और लाभकारी विचार हो सकता है।

भारतीय मांस उद्योग काफी हद तक एक असंगठित क्षेत्र है जिसमें अकुशल आपूर्ति श्रृंखला और खुदरा बाजार पर मुख्य रूप से स्थानीय कसाई की दुकानों का कब्जा है। मांस उद्योग में मौजूदा मांग-आपूर्ति अंतर का मुख्य कारण कोल्ड चेन तापमान बनाए रखने में लगी पूँजी है। ताजा मांस और पशु प्रोटीन की बढ़ती मांग और पारंपरिक विक्रेता केंद्रित बाजार में स्वच्छता और गुणवत्ता विकल्पों की कमी भारत में

ऑनलाइन मांस बिक्री बाजार को काफी हद तक संचालित करती है, जिसमें ऑफलाइन विकल्पों की तुलना में बेहतर आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और तकनीकी हस्तक्षेप है। इनमें से कुछ कंपनियों ने कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स फर्मों के साथ समझौता किया है। वर्तमान में इंटेलिजेंट मार्केटिंग, जहां आप अपने लक्षित ग्राहक का विशेष रूप से वर्णन कर सकते हैं, उनके लिए मार्केटिंग करना उतना ही आसान हो जाएगा। ये ऑनलाइन स्टार्टअप वर्तमान में संयंत्र स्थापित करने के लिए फार्म्स के साथ काम कर रहे हैं, कर छूट के लिए सरकारी निकायों के साथ संपर्क कर रहे हैं, और उपकरण, भोजन और पर्यावरण समझ आदि पर परामर्श कर रहे हैं, जैसे कि बिगबास्केट, लिशियस, ईजीमीट, बैंगलुरु स्थित जैपफ्रेश, पुणे स्थित मीट रूट, इत्यादि ये कंपनियां मुख्य रूप से बैंगलुरु, गुरुग्राम, पुणे और अन्य महानगरों की कामकाजी महिलाएं को भी निशाना बना रही हैं।

ऑनलाइन मांस विपणन का व्यापार बढ़ते डिजिटल युग में एक अद्वितीय और लाभकारी विकल्प है। स्टार्टअप्स और छोटे व्यवसाय इस क्षेत्र में नए और उत्कृष्ट अवसर खोज सकते हैं। सुविधा और पारदर्शिता को ध्यान में रखते हुए, भारत में उपभोक्ता धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से ऑनलाइन मांस खरीद ब्रांडों की ओर कदम बढ़ाएंगे जो उन्हें उनके स्वास्थ्य और कल्याण के साथ कोई समझौता किए बिना उच्च गुणवत्ता वाले मांस खरीदने के अनुभव की गारंटी देगा।

ऑनलाइन मांस विपणन

- डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग: ऑनलाइन मांस विपणन के लिए, स्टार्टअप्स को डिजिटल प्लेटफार्मों का सही उपयोग करना होगा। इंटरनेट पर विभिन्न आपूर्ति और डिलीवरी सेवाओं के माध्यम से ग्राहकों को पहुंचाना महत्वपूर्ण होता है।

- गुणवत्ता और सुरक्षा:** ऑनलाइन मांस बिक्री के लिए, गुणवत्ता और सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। ग्राहकों को विश्वास के साथ खरीदारी करने के लिए उन्हें उत्कृष्ट गुणवत्ता और सुरक्षा की गारंटी देनी चाहिए।
- ग्राहक सेवा:** ऑनलाइन मांस विपणन के सफल होने के लिए, अच्छी ग्राहक सेवा प्रदान करना महत्वपूर्ण है। ग्राहकों के प्रश्नों और समस्याओं का समय पर समाधान करना और उनकी संतुष्टि को प्राथमिकता देना चाहिए।
- मार्केटिंग और प्रचार:** अच्छी मार्केटिंग और प्रचार की जरूरत होती है ताकि लोग ऑनलाइन मांस खरीदने के लिए आकर्षित हों। सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग और डिजिटल विज्ञापन इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- स्थानीय और ग्लोबल बाजार:** ऑनलाइन मांस विपणन के माध्यम से, स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचा जा सकता है। इससे व्यापार की विस्तारित संभावनाएं बढ़ती हैं।

डिजिटल विपणन के लाभ

- विस्तार और पहुंच:** ऑनलाइन मांस विपणन आपको विशाल बाजार तक पहुंचने की सुविधा देता है। आप अपने उत्पादों को देशभर में बेच सकते हैं, जिससे आपकी वृद्धि को बढ़ावा मिलता है।
- लोगों तक आसानी से पहुंच:** ऑनलाइन प्लेटफार्म्स की शक्ति से, आप आसानी से लोगों तक पहुंच सकते हैं जो आपके उत्पादों की खोज कर रहे हैं।
- उपभोक्ता केंद्रित विकल्प:** ऑनलाइन विपणन प्लेटफार्म्स आपको विभिन्न उपभोक्ताओं के लिए विकल्प प्रदान करते हैं, जैसे कि मांसाहारी और शाकाहारी ग्राहकों के लिए अलग उत्पादों

की पेशकश।

मांस स्टार्टअप्स एवं ऑनलाइन मांस विपणन

- विपणन के लिए प्लेटफार्म का चयन:** पहले विपणन के लिए सही प्लेटफार्म का चयन करना होगा। यह सुनिश्चित करना होता है की चयनित उत्पादों की विचारशीलता, पहुंच और लक्ष्य बाजार के साथ मेल खाता हो।
- उत्पादों की गुणवत्ता:** उत्पादों की गुणवत्ता और संरचना पर विशेष ध्यान देना चाहिए। विशेष रूप से, व्यापार की पहचान बनाने के लिए अद्वितीयता और मान्यता में भरोसा करना होगा।
- प्रचार और विपणन:** सफलता के लिए, अपने उत्पादों का अधिक से अधिक प्रचार और विपणन करने की आवश्यकता होती है। सोशल मीडिया, वेबसाइट, और डिजिटल विज्ञापन इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- निर्माता से उपभोक्ता तक:** स्टार्टअप के रूप में, हम सीधे अपने उत्पादक से उपभोक्ता तक कनेक्ट कर सकते हैं, जिससे हमारी नई बिजनेस बढ़ती मांग को पूरा करने में मदद मिल सकती है।
- संवेदनशीलता:** बहुत से लोग अब अपनी आहार में संवेदनशीलता बढ़ा रहे हैं और वे स्वस्थ और नैतिक मांस उत्पादों की खोज कर रहे हैं, जिससे मांस स्टार्टअप को इस बाजार में अच्छा स्थान प्राप्त हो सकता है।
- रोजगार सृजन:** मांस स्टार्टअप व्यावसायिक स्तर पर रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जिससे आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- स्थानीय उत्पादन:** बहुत से मांस स्टार्टअप अपने उत्पादों का स्थानीय उत्पादन करते हैं, जिससे ग्राहकों को स्वादिष्ट और प्राकृतिक उत्पादों का अनुभव मिलता है।

बुन्देलखण्ड में बकरी पालन : एक अध्ययन

अनुपम कृष्ण दीक्षित, रवीन्द्र कुमार, के. गुरुराज, बी. राय, संदीप कुमार एवं शृद्धा सिंह



उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड क्षेत्र मध्य भारत में विंध्य पहाड़ी मार्ग पर भारत-गंगा के मैदानों में स्थित है। इस क्षेत्र में दक्षिण उत्तर प्रदेश के सात जनपद (झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा और चित्रकूट) आते हैं। इस क्षेत्र में 40 प्रतिशत लोग गूंजे रेखा से नीचे एवं 40 प्रतिशत लोग सूखे और सिंचाई संसाधनों की कमी के कारण गरीबी रेखा के करीब हैं। अनिश्चित बारिश और सूखे के कारण फसल की विफलता इस क्षेत्र में एक आवर्ती घटना है। पशु पालन इस क्षेत्र में जोत के आकार के बाबजूद आवर्ती फसल विफलताओं का मुकाबला करने



प्रतिशत लोग सूखे और सिंचाई संसाधनों की कमी के कारण गरीबी रेखा के करीब हैं। अनिश्चित बारिश और सूखे के कारण फसल की विफलता इस क्षेत्र में एक आवर्ती घटना है। पशु पालन इस क्षेत्र में जोत के आकार के बाबजूद आवर्ती फसल विफलताओं का मुकाबला करने

के लिए एक सुरक्षा चक्र प्रदान करती है। बकरी पालन इस क्षेत्र में सैकड़ों सीमांत एवं छोटे किसानों की आय का स्रोत है। यह राज्य में बकरियों की कुल संख्या (15.59 मिलियन) का लगभग 10 प्रतिशत यानी 15 लाख है। यह कुल सकल घेरेलू आय में लगभग 20-50 प्रतिशत का योगदान देता है। सुनिश्चित आय, रोजगार और पोषण के अलावा बकरी पालन वित्तीय संकट में महत्वपूर्ण आदानों की खरीद के लिए नकद राशि प्रदान करके और फसल की विफलता के मामले में जोखिम से बचने के लिए फसल उत्पादन में सहयोग प्रदान करता है।

बकरी पालकों का सामाजिक स्तर: बुन्देलखण्ड में परियोजना क्षेत्र में आधारीय सर्वेक्षणों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि बकरी पालन करने में क्रमशः पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति तथा कुछ संख्या में सामान्य वर्ग भी हैं। जिनमें अशिक्षित बकरी पालकों की तादात अधिक पायी गई। करीब 42 प्रतिशत लोगों ने बकरी पालन को और करीब 37 प्रतिशत ने मजदूरी को अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में चुन रखा है। जिसमें परिवार की कुल आय में बकरी पालन 30 प्रतिशत का योगदान करता है।

आवास: बकरी पालकों की खराब आर्थिक स्थिति के कारण इस क्षेत्र में बकरियों के लिए आवास सुविधाओं का अभाव है जो कि अधिकांशतः 98 प्रतिशत बाड़े कच्चे प्रकार के पाये गये। बकरियों को ज्यादातर मानव आवास में रखा जाता है जिसमें अधिकतर गर्भियों में खुले बरामदे और सर्दियों एवं बरसात के दौरान घर के कमरे के अन्दर रखते हैं।

पोषण: बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बकरियों को बड़े पैमाने पर विरल प्रबंधन प्रणाली' के तहत पाला जाता है। जिसमें बंजर भूमि एवं कटाई के बाद बचे जंगल क्षेत्र पर चराई बिना किसी शुल्क के साथ कराते हैं। आधारीय सर्वेक्षणों के आधार पर बकरी झुण्ड का औसत आकार 18 बकरियाँ तक हैं। बकरियों की चराई के लिए रबी मौसम को छोड़कर खेती योग्य भूमि चराई के लिए उपलब्ध रहती है। जो बकरी पालक बड़े झुण्ड रखते हैं वो अपनी बकरियों को अकेले चराते हैं। जबकि छोटे झुण्ड रखने वाले बकरी पालक बकरियों को अनुबंधित चराई पर पालते हैं। अनुबंध चराई की दर गांवों एवं मौसम (100 रूपये/माह/बकरी) में भिन्न होती है। झुण्ड के आकार, चारों की उपलब्धता एवं मौसम के आधार पर किसान अपनी बकरियों को 6 से 7 घण्टे प्रतिदिन चराते हैं। इसके अतिरिक्त औसतन 100-150 ग्राम दाना प्रतिदिन करीब वर्ष में 70 दिन तक देते हैं।

प्रजनन: प्रजनक बकरा बहुत कम बकरी पालकों द्वारा रखा जाता है यानी बड़े बकरी पालकों एवं गांवों में 'माता का बकरा' नामक प्रजनक बकरे का उपयोग किया जाता है। प्रजनन पर बकरी पालक का कोई भी अंकुश नहीं रहता है और सभी मौसम में बकरियों को गर्भित कराते हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अन्तः प्रजनन की समस्या

मुख्यतः पायी जाती है। इस क्षेत्र के लिए नस्ल सुधार हेतु अच्छे गुणों वाले बकरों की आवश्यकता है।

बकरी स्वास्थ्य: बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विभिन्न गांवों में बकरियों की बीमारियों के कारण 15-20 प्रतिशत



मृत्यु हो जाती है। इस क्षेत्र में बकरियों में सामान्यतः पाये जाने वाले रोग जिनमें बकरी प्लेग (पीपीआर), आंत विषाक्तता (ई.टी.), खुरपका-मुँहपका (एफ.एम.डी.), निमोनिया, एनीमिया, दस्त एवं परजीवी रोग (लीवर फ्लूक) प्रमुख हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में पी.पी.आर. एवं एफ.एम.डी. का प्रकोप अधिक देखने को मिला है। परजीवी संक्रमण मुख्य रूप से स्थिर एवं दूषित पानी पीने, अन्य प्रजातियों के साथ साझा चराई एवं डिवर्मिंग शेड्यूल को न अपनाने के कारण बहुत अधिक है।

बकरी पालन की आर्थिकी: भूमिहीन, सीमान्त एवं लघु किसानों के स्तर पर बकरी पालन इन परिवारों के न सिर्फ एक सतत आय का साधन है साथ ही साथ उनके कुपोषण को काफी हद तक दूर करता है। घर में परिवार के सदस्यों द्वारा इनकी देखभाल की जाती है। खासतौर से महिलाएँ एवं बच्चे भी बकरी पालन के आसानी से कर पाते हैं। मैंमनों और वयस्क बकरियों में मृत्युदर अधिक होने के कारण यहाँ प्रति बकरी प्रति वर्ष आर्थिक लाभ अपेक्षाकृत बहुत कम है। **अधिकांशतः** 60 प्रतिशत बकरी पालक अपनी बकरियों को गांव में ही कसाइयों को बेचते हैं। आधारीय सर्वेक्षणों के आकड़ों के आधार पर औसतन लाभ प्रति बकरी 3900-4000 रूपये प्रति वर्ष आंका गया है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा के द्वारा राष्ट्रीय पशुधन मिशन वित्त पोषित 'बकरी श्रंखला का मूल्य संवर्धन परियोजना' के माध्यम से तकनीकी हस्तक्षेप किया जाता है जिससे आगामी वर्षों में बकरी उत्पादन में काफी हद तक सुधार हो सके।



कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय प्रशिक्षण

- जुलाई से दिसंबर, 2023 के दौरान 'वैज्ञानिक बकरी पालन' पर कुल 06 राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (7 दिवसीय) का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में देश के 16 राज्यों से कुल 585 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें 560 पुरुष और 25 महिलाएं थीं।

अन्य प्रशिक्षण का आयोजन

- अजमेर, राजस्थान और ललितपुर (नाबार्ड), उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए 'वैज्ञानिक बकरी पालन' पर प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 48 प्रतिभागियों (19 पुरुष और 29 महिला) ने बकरी पालन के वैज्ञानिक तरीके सीखे।
- 'बकरी आहार के लिए चारा-दाना उत्पादन, प्रसंस्करण और राशन निर्माण' विषय पर दो स्व-वित्तपोषित 05 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (17-21, जुलाई एवं 18-22, दिसम्बर, 2023) आयोजित किए गए। बकरी पालन और चारा विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार और व्यवसाय के अवसर पैदा करने के लिए इस पहलू पर कुल पचास उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया गया।
- 18-22 सितंबर, 2023 तक 'स्वच्छ बकरी वध और मूल्य वर्धित बकरी मांस उत्पाद प्रसंस्करण' पर स्व-वित्तपोषित 05 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 07 राज्यों के 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- 20 से 27 सितंबर, 2023 तक 'छोटे जुगाली करने वालों की सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकियों में हालिया प्रगति' पर 08 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण अनुसूचित जाति (डीएपीएससी) और अनुसूचित जनजाति (डीएपीएसटी) के लिए आईसीएआर की विकास कार्य योजना के तहत प्रायोजित किया गया था, और इसका मतलब था अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के छात्रों और अनुसंधान विद्वानों के लिए छोटे जुगाली करने वालों से संबंधित सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना।



संरथान में आयोजित महत्वपूर्ण बैठकें, विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

● विचार-मंथन सत्र

11 अगस्त, 2023 को संस्थान में डॉ. वी.के. तनेजा, पूर्व उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) एवं कुलपति, जीएडीवीएएसयू, लुधियाना की अध्यक्षता में 'संरक्षण और बढ़ी हुई उत्पादकता के लिए बकरी प्रजनन रणनीतियों को पुनः डिजाइन करना' पर विचार-मंथन सत्र आयोजित किया गया था। कार्यक्रम निदेशक के रूप में संस्थान के निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली एवं संयोजक डॉ. एम.के. सिंह थे। इस अवसर पर डॉ. अभिजीत मित्रा, पशुपालन आयुक्त, एम/ओ एफएंडएएचडी, भारत सरकार मुख्य अतिथि थे और डॉ. ए.के. गहलोत, पूर्व वीसी, राज्यवास, बीकानेर (राजस्थान) सम्मानित अतिथि थे। सत्र में 22 पैनलिस्टों ने भाग लिया और 125 पेशेवरों ने ऑनलाइन भाग लिया, जिनमें निदेशक/पूर्व निदेशक, वैज्ञानिक, प्रोफेसर और बकरी उद्यमी शामिल थे। डॉ. मनीष कुमार चेटली ने देश में बकरी पालन के प्रबंधन, उपयोगिता, सुधार के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। डॉ. वी.के. तनेजा, पूर्व-डीडीजी,



संस्थान में आयोजित महत्वपूर्ण बैठकें, विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

पूर्व-एएचसी, पूर्व-वीसी गडवासु ने अपनी ऑनलाइन शुरुआती टिप्पणियों में दूध और मांस के उद्देश्य के आधार पर अलग-अलग नस्लों के विकास पर जोर दिया। क्षेत्र की विशिष्ट जलवायु खाद, उपलब्ध बाजार, मांग, जलवायु परिवर्तन तथा नस्लों के आधार एवं उपयोगिता के अनुसार बकरियों की विभिन्न नस्लों की उत्पादकता बढ़ाने की अनुशंसा की गई।



● संस्थान अनुसंधान समिति की मध्यावधि बैठक

आईसीएआर-सीआईआरजी, मखदूम की मध्यावधि संस्थान अनुसंधान समिति (आईआरसी) की बैठक 29-30 सितम्बर, 2023 को समिति कक्ष में संस्थान निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी। डॉ. अशोक कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी पीएमई सेल ने निदेशक का औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि

आईआरसी अनुसंधान के तकनीकी कार्यक्रम की समीक्षा और संशोधन के लिए संस्थान स्तर पर एक महत्वपूर्ण बैठक है, जो आईसीएआर और भारत सरकार की अपेक्षा और प्रतिबद्धता को पूरा करती है। निदेशक ने अपने परिचयात्मक भाषण में संस्थान आईआरसी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि यह बैठक अन्य विभागों के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत करने, उनके अनुसंधान कार्यों, विभिन्न प्रभागों में चल रही परियोजनाओं और संस्थान की समग्र अनुसंधान उपलब्धियों के बारे में जानने का अवसर प्रदान करती है। बैठक के दौरान सभी विभागाध्यक्ष / प्रभारी एवं वैज्ञानिकों ने अपनी परियोजनाओं कि प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।



● अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी)

आरएसी, आईसीएआर-सीआईआरजी, मखदूम की बैठक 06 अक्टूबर, 2023 को डॉ. ए. सी. वार्षेण्य, पूर्व कुलपति, दुवासु, मथुरा की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी। डॉ. मनीष कुमार चेटली, निदेशक आईसीएआर-सीआईआरजी, आरएसी सदस्य, और डॉ. जी.के. गौड़, उप महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. मुख्यालय, नई दिल्ली भी बैठक के दौरान उपस्थित थे। निदेशक, आईसीएआर-सीआईआरजी ने संस्थान की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और अनुसंधान उपलब्धियों और अन्य गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. अशोक कुमार,

प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी पीएमई, सदस्य सचिव आरएसी, आईसीएआर-सीआईआरजी ने पिछली आरएसी द्वारा की गई सिफारिश पर की गई कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रभाग/अनुभागों के प्रमुख ने अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्ट, सिफारिशों पर की गई कार्रवाई और अगले वर्ष के अनुसंधान कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समिति ने इस संस्थान में वैज्ञानिकों द्वारा की जा रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं पर कई सिफारिशें दीं।

● बकरी उद्यमिता विकास दिवस

संस्थान ने 21 नवंबर, 2023 को आईसीएआर-सीआईआरजी के निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली की अध्यक्षता में बकरी उद्यमिता विकास दिवस और प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. एन.पी. सिंह, माननीय कुलपति, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा इस अवसर के मुख्य अतिथि थे। डॉ. ए.के. जादौन, निदेशक उत्तर प्रदेश पशुपालन विभाग, डॉ. अनिबान गुहा, सहायक आयुक्त एनएलएम, डीएचडी नई दिल्ली, डॉ. एस.एन. अहमद, उप निदेशक पशुधन उत्पाद, एमओएफपीआई नई दिल्ली



सम्मानित अतिथि थे। आईसीएआर-आईआईएसडब्ल्यूसी चलेसर केंद्र के वैज्ञानिकों, डीडीएम नाबार्ड (आगरा और मथुरा), प्रमुख केवीके आगरा, उप निदेशक लघु पशु यूपीडीएचडी, प्रगतिशील किसानों, एफपीओ, मंजरी फाउंडेशन के अधिकारियों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने बकरी उद्यमिता विकास में अवसरों और चुनौतियों पर अपने विचार साझा किए। विभिन्न तकनीकी सत्रों में भारत-एनएलएम और खाद्य प्रसंस्करण एवं उद्योग मंत्रालय के अधिकारियों ने बकरी क्षेत्र में उद्यमिता विकास की चल रही योजनाओं और कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया। किसानों ने अधिकारियों के साथ बातचीत की और योजनाओं और आवेदन के तरीके आदि के बारे में अपनी शंकाओं को दूर किया। 200 से अधिक किसानों, एससी और एसटी बकरी पालकों और 12 राज्यों के 103 प्रशिक्षकों, प्रगतिशील बकरी पालकों (16), वैज्ञानिकों, विभिन्न लाइन विभागों के अधिकारियों ने समारोह में भाग लिया। संस्थान ने राज्य में बकरी क्षेत्र के विकास के लिए उत्तर प्रदेश पशुपालन एवं डेयरी विभाग के साथ समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किया।

संस्थान में आयोजित महत्वपूर्ण बैठकें, विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

● अनुसंधान सहयोग हेतु बैठक

संस्थान ने ओक्लाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी यूएसए और यूनिवर्सिटी ऑफ कनेक्टिकट यूएसए के संकाय के साथ एक शोध सहयोग बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में डॉ. जेरी मलेयर, एसोसिएट डीन ओक्लाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी यूएसए, प्रोफेसर रंजीत रामनाथन रिसर्च कोऑर्डिनेटर ओक्लाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी और प्रोफेसर अभिनव उपाध्याय यूनिवर्सिटी ऑफ कनेक्टिकट यूएसए ने भाग लिया। बकरी उत्पादन अनुसंधान और संबंधित क्षेत्रों में सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा की गई। सीआईआरजी के निदेशक डॉ.



मनीष कुमार चेटली ने वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों, विकसित प्रौद्योगिकियों और विस्तार कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। सभी गणमान्य व्यक्तियों ने प्रयोगशालाओं और पशुधन इकाइयों का दौरा किया। डीएपीएससी परियोजना के तहत महिला बकरी पालकों को गणमान्य व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण किट और सौर संचालित भी वितरित किए गए।

● संस्थान स्थापना दिवस समारोह

संस्थान का 44वां स्थापना दिवस 12 जुलाई, 2023 को आईसीएआर-सीआईआरजी के निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली की अध्यक्षता में संस्थान का ध्वज फहराकर मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मनमोहन सिंह चौहान, वीसी, जीबीपीयूएटी, पंतनगर उत्तराखण्ड और विशिष्ट अतिथि डॉ. पी.के. रात्त, एडीजी (एजी एंड बी), आईसीएआर, नई दिल्ली, डॉ. ए.के. तोमर, निदेशक, सीएसडब्ल्यूआरआई, अविकानगर, राजस्थान और डॉ. पी.के. रॉय, निदेशक, डीएमआर, भरतपुर राजस्थान थे। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान



के निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा वृक्षारोपण के साथ हुई। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को 'जल भरी कार्यक्रम' के माध्यम से 'जल ही जीवन है' का संदेश दिया गया। संस्थान निदेशक ने मंच पर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों सहित सभी गणमान्य अतिथियों का पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। मंच को संबोधित करते हुए संस्थान निदेशक ने कहा कि पिछले एक वर्ष में संस्थान द्वारा 07 राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये गये हैं, इसके अलावा संस्थान में वर्तमान में 45 से अधिक परियोजनाएं चल रही हैं, 04 प्रौद्योगिकी पेटेंट किये गये हैं। निदेशक ने संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों, पूर्व निदेशकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि संस्थान की 44 वर्षों की सफल एवं गौरवशाली यात्रा में आप सभी का योगदान सराहनीय है। किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ संस्थान अनुसूचित जाति (डीएपीएससी), जनजाति किसानों (डीएपीएसटी) और महिला किसानों के विकास और सशक्तिकरण पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है। इस अवसर पर गणमान्य व्यक्तियों द्वारा वार्षिक रिपोर्ट, सीआईआरजी एक नजर में, किताबें और पशु स्वास्थ्य कैलेंडर आदि जारी किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. मनमोहन सिंह चौहान, वीसी, जीबीपीयूएटी, पंतनगर उत्तराखण्ड और सीआईआरजी के पूर्व निदेशक ने कार्यक्रम और संस्थान की उपलब्धियों की सराहना की। विशिष्ट अतिथियों ने कहा कि संस्थान के स्थापना दिवस कार्यक्रम में भाग लेकर वे गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों और बकरी पालकों के विकास और पूरे देश में प्रौद्योगिकियों के प्रसार में संस्थान की भूमिका की भी सराहना की। अंतिम नोट के रूप में, उन्होंने संस्थान के स्थापना दिवस पर आईसीएआर- सीआईआरजी कर्मचारियों को बधाई दी और उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में किये गये उत्कृष्ट कार्यों के लिए वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को प्रशंसा पुरस्कार प्रदान किये गये।

● विश्व बकरी दिवस का आयोजन

संस्थान में 21 अगस्त 2023 को विश्व बकरी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. हबीबर रहमान, अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय प्रतिनिधि, दक्षिण एशिया, भारत और पूर्व डीडीजी (पशु विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली ने किसानों की आजीविका और भूमिहीन मजदूरों के पोषण में बकरी पालन की भूमिका और महत्व के बारे में बात की। उन्होंने वैज्ञानिकों से होने वाले आर्थिक नुकसान को कम करने के



संस्थान में आयोजित महत्वपूर्ण बैठकें, विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

लिए नए टीके बनाने की दिशा में अनुसंधान कार्य पर ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया। उन्होंने बकरी पालन के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली ने बैठक में उपस्थित सभी लोगों को संस्थान द्वारा किये जा रहे शोध कार्यों एवं विस्तार गतिविधियों की जानकारी दी। 103वें राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. हबीबर रहमान ने किया, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 11 राज्यों के 65 प्रतिभागियों ने भाग लिया और देश के विभिन्न हिस्सों से आये प्रगतिशील बकरी पालकों ने अपनी सफलता की कहानी उपस्थित लोगों के साथ साझा की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने प्रगतिशील बकरी पालकों को सम्मानित किया तथा अनुसूचित जनजाति विकास परियोजना के अन्तर्गत मथुरा जनपद के 50 किसानों एवं बकरी पालकों को आवश्यक सामग्री भी प्रदान की।

● स्वतंत्रता दिवस समारोह

संस्थान ने 15 अगस्त, 2023 को 77वां स्वतंत्रता दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया जिसमें संस्थान के सभी कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. मनीष कुमार चेटली, निदेशक, आईसीएआर-सीआईआरजी ने अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण में दिन के महत्व पर जोर दिया और झंडा फहराया। अपने भाषण में, निदेशक ने सभी स्टाफ सदस्यों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं और आजादी पाने के लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष और बलिदान को याद किया जो



भारत ने अपनी आजादी के बाद खाद्य उत्पादन सहित सभी पहलुओं में आत्मनिर्भरता हासिल करने के प्रयास में बिताए थे। सभी स्टाफ सदस्यों को भारत को 'आत्मनिर्भर राष्ट्र' बनाने के लिए समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ काम करने के लिए भी कहा गया। उत्सव के दौरान संस्थान के कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित और पुरस्कृत किया गया। संस्थान ने संस्थान के कर्मचारियों को झंडे वितरित करके और भारत सरकार की वेबसाइट पर कार्यक्रम की एक तस्वीर अपलोड करके 'हर घर तिरंगा अभियान' का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

● हिंदी पखवाड़ा का उत्सव

हिंदी पखवाड़ा 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2023 तक मनाया गया। संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक कर्मचारियों और अन्य परियोजना कर्मचारियों ने इस अवधि के दौरान आयोजित नोटिंग, निबंध, टाइपिंग, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी और एक्सटेम्पोर जैसे विभिन्न प्रतिस्पर्धी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया। 26 सितम्बर 2023 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला/कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका संस्थान के समस्त स्टाफ ने आनन्द उठाया। इस अवसर पर आईसीएआर-सीआईआरजी के निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली ने बताया कि किसी भी देश की एकता और विकास के लिए उस देश की राष्ट्रीय भाषा का समृद्ध होना बहुत जरूरी है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम हिंदी में काम करें और सरकारी तथा नियमित कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें। विभिन्न गतिविधियों के विजेताओं को परिषद के दिशानिर्देशों के अनुसार पुरस्कार और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।



● सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का विषय 'भ्रष्टाचार को न कहें; राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता' 30 अक्टूबर से 5 नवंबर, 2023 तक संस्थान के सभी कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण समारोह के साथ मनाया गया। डॉ. मनीष कुमार चेटली, निदेशक, आईसीएआर-सीआईआरजी ने सभी कर्मचारियों और कर्मचारियों को उत्सव के महत्व पर प्रकाश डाला। उत्सव के दौरान, पारदर्शिता, जवाबदेही और भ्रष्टाचार मुक्त सरकारों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आस-पास के गाँव में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थान के कर्मचारियों और छात्रों के लिए 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत-विकसित भारत' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवधि के दौरान स्टाफ सदस्यों और नागरिक समाज के सदस्यों ने सप्ताह भर की गतिविधियों में भाग लिया।



संस्थान में आयोजित महत्वपूर्ण बैठकें, विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

● आईसीएआर स्थापना दिवस पर प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन

संस्थान ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के स्थापना दिवस के अवसर पर भाग लिया। 95वां स्थापना और प्रौद्योगिकी दिवस कार्यक्रम 16-18 जुलाई, 2023 तक डॉ. सी. सुब्रमण्यम सभागार, एनएएससी कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया गया। आईसीएआर हर साल 16 जुलाई को अपना स्थापना दिवस मनाता है। इस वर्ष से इसे 'स्थापना एवं प्रौद्योगिकी दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। आईसीएआर स्थापना एवं प्रौद्योगिकी दिवस में 500 से अधिक किसानों के साथ-साथ पड़ोसी राज्यों के 1000 छात्र ने भी भाग लिया। संस्थान ने संस्थान निदेशक के कुशल नेतृत्व में विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया, जिसे आगंतुकों ने सराहा।



● विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह का आयोजन

संस्थान में 18-24 नवंबर, 2023 तक 'एक साथ रोगाणुरोधी प्रतिरोध को रोकना' विषय पर विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह, 2023 मनाया गया। निदेशक डॉ. मनीष कुमार चेटली ने रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह का उद्घाटन किया और कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। उत्सव के दौरान, पशु स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख डॉ. अशोक कुमार के कुशल मार्गदर्शन में पशु स्वास्थ्य प्रभाग द्वारा बहुआयामी जागरूकता पैदा करने के लिए संस्थान और आस-पास के गाँव में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।



● 'स्वच्छता परखवाड़ा' का आयोजन

'प्लास्टिक मुक्त संस्थान और कचरा मुक्त भारत' थीम पर 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान 17-31 दिसंबर, 2023 तक डॉ. मनीष कुमार चेटली की अध्यक्षता में संस्थान के सभी कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण समारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान निदेशक सहित अन्य कर्मचारियों ने संस्थान के हर्बल गार्डन में औषधीय पौधे रोपे। उन्होंने सभी कर्मचारियों से संस्थान परिसर में हरित आवरण बढ़ाने के लिए नियमित वृक्षारोपण अभियान चलाने का भी आग्रह किया। संस्थान परिसर में स्वच्छता बनाए रखने के लिए,

कर्मचारियों को समय-समय पर स्वच्छ भारत मिशन में योगदान देने और समाज के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के लिए जागरूक किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनय चतुर्वेदी, एसटीओ एवं नोडल अधिकारी, स्वच्छता अभियान द्वारा किया गया।



● किसान दिवस का आयोजन

संस्थान ने 23 दिसंबर 2023 को 'किसान दिवस' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य अतिथि डॉ. विकास पाठक, डीन, दुवासु, मथुरा ने की तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. राम बाबू शर्मा, राष्ट्रीय समन्वयक, आईसीएआर की गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर डीएपीएससी के तहत विभिन्न गांवों के लगभग 80 किसानों ने भी भाग लिया और बकरी पालकों को सामग्री वितरित की गई। संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं सभी कर्मचारियों ने भी भाग लिया। समग्र कार्यक्रम का संचालन डॉ. अरविंद कुमार एवं डॉ. मोहम्मद आरिफ द्वारा किया गया।



● प्रौद्योगिकी का व्यवसायीकरण

आईसीएआर-सीआईआरजी और मेसर्स इंद्राक्षी बेट्केयर प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (म.प्र.) के बीच 12 जुलाई, 2023 को व्यापार की शर्तों (टीओटी) पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता डॉ. रवींद्र कुमार, प्रमुख, एनएम एंड पीटी और उनकी टीम द्वारा विकसित 'बकरियों के लिए हर्बल एंटीकोसिडियल पूर्ण गोली फ़ीड फॉर्मूलेशन' नामक प्रौद्योगिकी के व्यवसायीकरण के लिए किया गया।



संस्थान में विशिष्ट अतिथियों का भ्रमण



सम्मान, पुरस्कार एवं विशिष्ट उपलब्धि

- डॉ. अनुपम कृष्ण दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख, प्रसार शिक्षा एवं सामाजिक अर्थशास्त्र अनुभाग को ICCGFLLES-2023 द्वारा कृषि विस्तार के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 'प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।



भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत

दूरभाष न.: 0565-2763380, फैक्स न.: 0565-2763246

ई-मेल: director@cirg.res.in,

बेबसाइट: <http://cirg.res.in>

किसान एकल खिड़की : 0565-2970999

यमुना सिंडिकेट, मथुरा, ई-मेल : ys9456684421@gmail.com द्वारा मुद्रित